

विचार बिन्दु

धैर्य कड़ुवा होता है, पर उसका फल मीठा होता है। -रूसो

आईसीयू में मरने की संभावनायें कम करने हेतु जीवन और मृत्यु के मध्य आयुर्वेद के सात रक्षा-कवच

बात 26-27 सितम्बर 2018 की है। भारतीय वन सेवा के 1988 बैच के लगभग 70 वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा सेवा में तीस वर्ष पूरे करने पर इंद्रिणी गाँधी राष्ट्रीय वन अकादमी देहरादून में प्रशिक्षण चल रहा था। साथियों से तीस साल बाद मिलकर बड़ा अच्छा लगा। वानिकी पर विभिन्न विषयों के दिग्गज विद्वानों के व्याख्यान हुये। ज्ञान की बातें हुई। इस बीच कुछ साथियों का विचार आया कि हम सब उम्र के ऐसे पड़ाव पर हैं जब व्यक्तिगत स्वास्थ्य महत्वपूर्ण हो गया है। वन और पर्यावरण का स्वास्थ्य समझाले के लिये स्वयं का स्वास्थ्य समझालना आवश्यक है। अतः एक सत्र में स्वास्थ्य विषयक चर्चा का मुझे मौका मिला। बात यहाँ तक तो सामान्य है, परन्तु महत्वपूर्ण बात यह है कि आयुर्वेद के प्रति देश के वरिष्ठ अधिकारियों में इतनी गंभीर रुचि देखकर मुझे यह लगा कि आयुर्वेद का समय एक बार पुनः आ गया है। संक्षिप्त व्याख्यान और चर्चा के दौरान न केवल पूरा हाल खराब बरा था बल्कि आधा घंटे की चर्चा को तीन सत्रों तक बढ़ाना पड़ा। एक-एक घंटे के दो सत्र तो शाम को ही हो पाये जिसमें परिवार के सदस्य भी शामिल हुये। बातों तो बहुत हुई पर एक बात स्पष्ट निकलकर आयी कि अगले एक वर्ष तक प्रत्येक रविवार अतिथि सम्पादकीय की श्रृंखला इस प्रकार लिखी जाये जिसमें जीवन और मृत्यु के मध्य आयुर्वेद की सात रक्षा दीवारों के सिद्धांत के विविध पहलुओं पर क्रमानुसार व्याख्यान रूप से प्रकाश डाला जाये। तदनुसार एक वर्ष तक चलने वाली चर्चा को आज यहाँ शुरुआत है। इस श्रृंखला को मैं भारतीय वन सेवा के वर्ष 1988 बैच के सभी अधिकारियों और उनके परिवारों को उनके आयुर्वेद प्रेम के लिये समर्पित करता हूँ।

दरअसल आयुर्वेद को आज नये सिरे से उस समग्रता में देखना आवश्यक है जिसे मैं आयुर्वेद के सात रक्षा-कवचों का सिद्धांत कहता हूँ। आहार, विहार, स्वस्थवृत्त, सद्बत, पंचकर्म, रसायन और औषधि, जीवन तथा मृत्यु के मध्य आयुर्वेद के सात रक्षा-कवच हैं। जब तक इन सात रक्षा-कवचों को मजबूत न रखा जाये तब तक बीमारियों से बचाव करना या स्वस्थ रहना संभव नहीं है। शरीर का व्याधिभक्तत्व या इम्प्युनिटी, स्वास्थ्य या रूग्णता, हितकारी और सुखकारी आयु आदि अन्ततोगत्वा इन्हीं सात रक्षा-कवचों की दीर्घकालिक स्थिति से निर्धारित होते हैं। कहने को तो ये सात रक्षा-कवच साधारण हैं, किन्तु इनमें आयुर्वेद की समग्रता समाहित है।

जैसा कि आज की जीवन शैली से स्पष्ट है, हम सात में से उन छह किलेबंदियों या दीवारों को तोड़ रहे हैं जो हमारे स्वास्थ्य और रूग्णता के बीच मौजूद हैं। ये सात दीवारों को पुनः समझें तो आहार या खान-पान, विहार या जीवनशैली, स्वस्थवृत्त या व्यक्तिगत स्वास्थ्य से जुड़े आचरण, सद्बत या व्यक्तिगत सदाचरण, पंचकर्म या शारीरिक विषाक्तता को बाहर करने के लिये आयुर्वेद की पांच प्रक्रियायें, रसायन या उम्र-आधारित रोगजनन को रोकने हेतु कायाकल्प उपाय और अंततः औषधि या चिकित्सा हैं।

जब हम पहली छः दीवारों को टूटने देते हैं, जैसा कि हम प्रायः करते हैं, तो हमारे विकल्प सीमित हो जाते हैं। हमारा जीवन सीधा दवाओं के बफेरी हो जाता है। मैंने यहाँ पहले भी लिखा है जैसे ही हम बीमार होते हैं वैसे ही हम उन उद्योगों के लिये रेवेन्यू-जेनरेटर हो जाते हैं जिनके लिये स्वास्थ्य या हेल्थकेयर अब दुधारा गाय बन गया है। अगर सातवीं दीवार टूटती या कहिये कि दवा विफल हुई तो हमारा काम-तमाम हो जाता है।

आने वाले एक वर्ष तक हम प्रत्येक रक्षा-कवच के प्रत्येक पहलू पर प्रकाश डालेंगे। इस विश्लेषण के लिये आयुर्वेद की संहितायें, आधुनिक वैज्ञानिक शोध और अनुभवजन्य ज्ञान की त्रिवेणी का उपयोग किया जायेगा। संहिताओं, शोध और अनुभव की त्रिवेणी का संगम ही हमारा प्रमाण-आधार होगा। इस कार्य के लिये दुनिया की सर्वश्रेष्ठ शोध-पत्रिकाओं में आयुर्वेद के सिद्धांतों, योगों, और औषधियों पर आज तक विषय भर में प्रकाशित लगभग सात लाख शोधपत्रों का डेटाबेस भी तैयार किया गया है। इन शोधपत्रों में से अनेक में आयुर्वेद शब्द का उल्लेख हुआ हो या नहीं पर विषय-वस्तु की दृष्टि से ये सभी शोधपत्र आयुर्वेद से सम्बंधित हैं।

अगले एक वर्ष तक यह श्रृंखला असल से एक मूल प्रश्न का उत्तर देगी कि यदि हम ईमानदारी से बेहतर उम्र चाहते हैं और पृथ्वी पर हमारे कार्यकाल के आखिरी दिन तक स्वस्थ रहना चाहते हैं, तो क्या करना चाहिए? दूसरे शब्दों में, हम आपको यहाँ बतायेंगे कि जीवन-शैली, खान-पान, रहन-सहन कैसा हो कि हम सदैव स्वस्थ व्यक्ति की श्रेणी में गिने जायें। इस प्रश्नों के उत्तर उन सात रक्षा-दीवारों के निरंतर रखरखाव और प्रबंधन पर आपको ठोस जानकारी उपलब्ध करायेंगे, जिनको हमने ऊपर स्पष्ट किया है। सदा निरोगी रहने के लिये आपको अपने आयुर्वेदाचार्य से निरंतर परामर्श करने की जरूरत है, फिर भी यह श्रृंखला आपको उपयोग के लिये ऐसा ज्ञान उपलब्ध करायेंगी

जिसके द्वारा आप सदैव स्वस्थ रह सकते हैं।

दरअसल तीन कारण हैं जो सभी बीमारियों को जन्म देते हैं-जीवन में हमारे द्वारा की जाने वाली बौद्धिक त्रुटियाँ, इन्द्रियों का असंतुलित उपयोग और समय का प्रभाव-ये तीनों सभी प्रकार के विकारों का कारण हैं। यदि हम त्रुटियों न करें, बुद्धि, इन्द्रियों और समय का संतुलित उपयोग करें तो बीमारी से बचाव संभव है। आयुर्वेद किसी अन्य चिकित्सा प्रणाली की तुलना में अच्छे स्वास्थ्य को अधिक व्यापक और समग्र रूप से परिभाषित करता है। लगभग 1200 ईसा पूर्व से 600 ई.पू. के दौरान आचार्यसुश्रुत, जो दुनिया के पहले सर्जन और संत-वैज्ञानिक के रूप में प्रतिष्ठापित हैं, ने त्रिदोष (मूल सिद्धांत जो शरीर की फिजियोलोजी को समझाले हैं), अग्नि (चयापचय और पाचन तंत्र), धातुयें (शरीर के ऊतक), मलक्रिया (अपशिष्ट उत्पत्ती) का उत्सर्जन बराबर काम करते हैं, और आत्मा, मन और इन्द्रियों प्रसन्न रहती हैं, तो हम मान सकते हैं कि हम स्वस्थ हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो शरीर, मन और आत्मा का सुसंगत संतुलन ही स्वास्थ्य है। हम इन कारणों पर भी विस्तार से प्रकाश डालेंगे।

आयुर्वेद वैयक्तिक चिकित्सा का जनक है। प्रत्येक व्यक्ति के लिये प्रकृति (वात, पित्त, कफ) और सत्त्व (सत्त्व, रजस, तमस) प्रकृति की वर्तमान स्थिति तथा साथ शरीर बल (जीवन शक्ति) और कई अन्य प्रासंगिक कारणों का मूल्यांकन किया जाना आवश्यक होता है। बढ़ती आयु से संबंधित रोगजनन को रोकने के लिये कुछ सामान्य निर्देशों का पालन उपयोगी है। उपयुक्त आहार, विहार (जीवनशैली, व्यायाम, नींद इत्यादि), सद्बत (व्यक्तिगत आचरण का कोड), स्वस्थवृत्त (व्यक्तिगत स्वास्थ्य का कोड), रसायन (वयःस्थापक और कायाकल्प), पंचकर्म (शारीरिक विषाक्तता को बाहर करने के लिये आयुर्वेद की पांच प्रक्रियायें) और औषधि (चिकित्सा) को न अपनाने के कारण हम तमाम रोगों की समस्या भुगतें।

स्वास्थ्य-रक्षण के साथ ही उन रोगों पर विशेष विश्लेषण भी किया जायेगा जो बायोमैडिकल चिकित्सा पद्धति को दी गई भारी प्राथमिकता एवं बजट के बावजूद विश्व को निरंतर बीमार करते जा रहे हैं। इनमें मोटापा, हृदय रोग, मानसिक रोग, कैंसर, मधुमेह, एवं रक्तस्राव आदि के रोग शामिल हैं। इन रोगों के सन्दर्भ में ही जीवनशैली, पंचकर्म एवं रसायन चिकित्सा आदि का प्रमाण-आधारित विश्लेषण भी किया जायेगा। चर्चानि रोगों और उनसे बचने के लिये आयुर्वेद, शोध, और अनुभव से प्रमाणित सलाह का निरंतर समावेश किया जायेगा।

एक बार पुनः यह बताना उचित होगा कि पत्रकारिता और विज्ञान के सलाहसौचर्व वैश्विक मूल्यों और मानदंडों के अनुरूप यहाँ प्रस्तुत प्रमाण-आधारित सामग्री में आप निष्पक्षता, सत्यवादिता, पारदर्शिता, न्यायप्रियता, उत्तरदायित्व, प्रामाणिकता और स्पष्टोक्ति पायेंगे। परन्तु केवल ज्ञान की उपलब्धता स्वास्थ्य में सुधार नहीं ला सकती। इस जानकारी का उपयोग आप अपनी आयु को हितकारी एवं सुखकारी बनाने में करेंगे तभी लाभ है। ज्ञान को कार्य से जोड़ना और जीवन में आत्मसात करना आवश्यक है।

भारतीय समाज ने आयुर्वेद के ज्ञान को ऐसा भुलाया कि आज भारत अनेक रोगों की वैश्विक राजधानी बनता जा रहा है। यहाँ प्रस्तुत की गयी जानकारी इन समस्याओं से मुक्त रहने में निरंतर आपकी मदद करती रहे, यही कामना है। आने वाले एक वर्ष तक इन विषयों पर संहिताओं, साइंस और अनुभव की त्रिवेणी के संगम से उपजी जानकारी को समाहित करते हुये विस्तार से प्रकाश डालेंगे। अपने आयुर्वेदाचार्य के साथ मिलकर आप इस जानकारी का उपयोग स्वयं को स्वस्थ रखने में कर पायेंगे ऐसी आशा है।

-अतिथि सम्पादक, डॉ. दीप नारायण पाण्डेय (इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)

(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण' के सिद्धांत से प्रेरित हैं।)

प्राकृतिक व मानवीय कारणों से हो रही हैं पक्षियों की मौत : प्रो. माथुर

अजमेर,(कांस)। महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय के पर्यावरण विज्ञान विभाग में शनिवार को विश्व प्रवासी पक्षी दिवस मनाया गया।

कार्यक्रम में प्रो. प्रवीण माथुर ने प्रवासी पक्षियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ये मेहमान पक्षी मीलों दूर से चलकर आते हैं तो सर्वप्रथम हमारा यह दायित्व है कि हम उन्हें उचित संरक्षण प्रदान करें। उन्होंने कुछ विशेष पक्षियों जैसे 'पेन्टीड स्टोर्क' आदि का जिक्र किया जो आनासागर व केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में आती हैं। उन्होंने इन पक्षियों के प्रवास, प्रजनन व वातावरणीय कारणों के परस्पर संबंध पर भी चर्चा की। उन्होंने बताया कि प्रवास से पहले इन पक्षियों में संवेदनशीलता अति तीव्र हो जाती है तथा उनका वसा 40 से 100 प्रतिशत बढ़ जाता है। यह तीव्र संवेदनशीलता उनके प्रवास पर जाने का संकेत है। ये पक्षी प्राकृतिक चिह्न जैसे चांद, सितारे, सूर्य आदि की स्थिति को जानकर विश्व के एक कोने से दूसरे कोने में प्रवास के लिए उड़ान भरते हैं।

उन्होंने इन मेहमान पक्षियों पर



अजमेर के महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय में विश्व प्रवासी पक्षी दिवस कार्यक्रम में प्रो. प्रवीण माथुर व प्रो.के.सी शर्मा सहित अन्य अतिथि मौजूद थे।

मानवीय कारणों से पड़ने वाले बुरे प्रभावों की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि पुरे विश्व में पवन चक्की, बिजली की तारें, टावर, ऊंची इमारतों से लगभग 10000-40000 पक्षियों की मौत हो जाती है जो अल्प-उखद है। साथ में प्राकृतिक तूफान, तेज हवाओं के कारण भी ये परिदेव अपना शिकार भटक जाते हैं जो अंततः उनकी मौत का कारण बन

जाते हैं। कीटनाशकों का अत्यधिक प्रयोग भी इनकी संख्या में कमी का कारण है। मानवीय कारणों से उनके भोजन स्रोत खत्म हो गये हैं जिससे उनमें भूख की समस्या बढ़ रही है और उनकी अस्मय मौत हो रही है। एक और प्राकृतिक समस्या परमपक्षी पक्षियों द्वारा प्रवासी पक्षियों को खाना जाना व साथ में किसी बीमारी का

फैलना उनकी मौत का कारण है। प्राकृतिक प्रदूषण जैसे शील, तालाव व समुद्रों में तेल का रिसाव भी पक्षियों के लिए एक बड़ा खतरा है। उन्होंने विश्व स्तर पर वन भूमि संधि जिसे 'रामसर संधि 1971' कहा जाता है का जिक्र भी किया। उन्होंने कहा कि इस संधि को पूरे विश्व को अपनाया चाहिए ताकि इन्हें विश्व स्तर पर बचाने के पूर्ण प्रयास किये



■ प्रवासी पक्षियों के प्रवास व प्रजनन पर की चर्चा
■ एमडीएसयू में विश्व प्रवासी पक्षी दिवस मनाया

जाएँ। 'बर्ड फेयर' अजमेर का जिक्र करते हुए कहा कि इसका मकसद पक्षी संरक्षण के साथ-साथ अजमेर के आमजन को अतिथि के प्रति संवेदनशील बनाना रहा है। बर्ड कन्सर्वेशन सोसायटी के उपाध्यक्ष डॉ. के.के. शर्मा ने आनासागर झील में बने आश्रय स्थलों को बचाने की जरूरत पर बल दिया। उन्होंने पक्षियों के साथ जुड़ना सुखद बताया। उन्होंने विभिन्न पक्षियों के खाने की आदतों को भी चर्चा की। साथ में पर्यावरण विज्ञान विभाग में चल रहे जो कोर्सों का जिक्र भी किया जो पूर्ण रूप से पक्षियों पर आधारित है।

करौली में अजगर को पकड़कर वन क्षेत्र में छोड़ा

करौली, (निर्स)। कैलादेवी मंदिर ट्रस्ट विद्यालय के पास खेत में घूम रहे अजगर को वन विभाग की रेस्क्यू टीम ने पकड़कर वन्य जीव अभयारण्य क्षेत्र में छोड़ा।

कैलादेवी कस्बा स्थित कैलादेवी मंदिर ट्रस्ट स्कूल के पास खेत में वन विभाग को एक अजगर के आने की सूचना ग्रामीणों द्वारा दी गई। जिस पर क्षेत्रीय वन अधिकारी लालचंद यादव ने रेस्क्यू टीम के सदस्य ओमलाल, वनपाल पुष्पेन्द्र मावई, वनरक्षक धर्मेन्द्र, मनीश डोई, नवल की अजगर को रेस्क्यू के लिए मौके पर भेजा गया। जहाँ तीन मशकत करते हुए अजगर को सफुल्य पकड़कर जंगल में छोड़ दिया। रेस्क्यू टीम के सदस्य पुष्पेन्द्र सिंह मावई ने बताया कि अजगर करीब 10 से 12 फिट लम्बा था तथा उसने कुछ खा रखा था। अजगर को देखकर लोगों की मौके पर भारी भीड़ जमा हो गई, अजगर को रेस्क्यू करके कैलादेवी वन्य जीव अभयारण्य स्थित सूख नदी के किनारे पर सुरक्षित छोड़ दिया गया है।

नवरात्र मेले में पांच लाख श्रद्धालु कैलादेवी मां के दर्शन से लाभांवित

करौली, (निर्स)। कैलादेवी नवरात्र मेले में शनिवार को चौथे दिन भी श्रद्धालुओं का आना बढस्तूर जारी है। मेले में स्थानीय श्रद्धालुओं के साथ ही उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश और हरियाणा राज्यों से पैदल एवं वाहनों से अब तक



करौली के कैलादेवी में चल रहे नवरात्र मेले में लाखों भक्तों ने कतार में लग माता के दर्शन किए।

■ स्थानीय लोगों के साथ पड़ोसी राज्यों से आ रहे भक्त
■ जिला प्रशासन, मंदिर ट्रस्ट व कई संस्थाओं ने व्यवस्थाएं की

पांच लाख के लगभग श्रद्धालु कैलादेवी मंदिर में पहुंच कर मां के दर्शनों से लाभांनित हो रहे हैं। दर्शनार्थी मंदिर परिसर में दीप प्रज्जलित कर अपनी-अपनी मनोकामना पूर्ण करने के लिए मां की आराधना कर रहे हैं। जिला

प्रशासन ने आने वाले श्रद्धालुओं के लिये समुचित साफ-सफाई, सुरक्षा, ठहरने के साथ ही चिकित्सा व्यवस्था एवं पेयजल और आवागमन के व्यवस्थापन के व्यापक व्यवस्थाएं की हैं। श्रद्धालुओं से बातचीत करने पर उन्होंने इंतजामों से संबंधित व्यवस्था के बारे में बताया कि इस बार उन्हें मंदिर दर्शनों में किसी

कतारबद्ध होकर बिना किसी परेशानी के दर्शन कर रहे हैं। मंदिर ट्रस्ट, धार्मिक एवं स्वयं सेवी संस्थाओं के सामूहिक प्रयासों द्वारा ठहरने एवं खाने पीने के व्यवस्थापन किये गये हैं। श्रद्धालुओं से बातचीत करने पर उन्होंने इंतजामों से संबंधित व्यवस्था के बारे में बताया कि इस बार उन्हें मंदिर दर्शनों में किसी

तरह की कोई परेशानी नहीं हुई। उपखंड अधिकारी एवं मेला मजिस्ट्रेट जेपी गौड़ ने बताया कि मेले में श्रद्धालुओं की सुरक्षा व्यवस्था सहित सभी आधारभूत उपलब्ध कराई जा रही है। उन्होंने बताया कि मेले में पुरुषों और महिला श्रद्धालुओं की दर्शनों के लिये अलग-अलग कतारों में व्यवस्था की गई।

डेंगू बुखार के दर्जनों रोगियों का इलाज कर चुके हैं वैद्य चौमाल

सादलपुर, (निर्स)। राजगढ़ के महावीर प्रसाद जोशी आयुर्वेद अस्पताल में सेवाएँ देने वाले वैद्य सुदर्शन चौमाल आयुर्वेदिक पद्धति से रोजाना औसतन एक-सौ रोगियों को निःशुल्क चिकित्साकी सेवाएँ प्रदान करते हैं। वहीं डेंगू बुखार के दर्जनों रोगियों का इलाज कर चुके हैं।

पिछले दो दशक से आयुर्वेद के क्षेत्र में सेवाएँ देने वाले उक्त वैद्य की काविलियत एवं राजगढ़ क्षेत्र की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए जोशी औषधालय के संचालक सवा तीन साल पूर्व अपने औषधालय में लाए थे। उस समय यही ऊहापोह सभी के मन में ही नहीं, स्वयं चौमाल का मन में भी काफी समय तक रही कि राजगढ़ जैसे क्षेत्र में किस प्रकार जनता का लाभान्वित किया जाए। मगर लक्ष्य निष्काम सेवा का था एवं लगन दिल की, तो आगे-आगे सफलता मिलगी गई। आज स्थिति यह बन गई है कि गंभीरतम रोगी भी एक बार निर्दिष्टरूप से आवश्यक वैद्य चौमाल की शरण में आते हैं।

पूर्णतया आयुर्वेद पद्धति से रोगियों का उपचार करने वाले चौमाल जहाँ दक्ष एवं अनुभवी चिकित्सक हैं, वहीं धीर गंभीर तथा व्यवहार कुशल व्यक्तित्व भी हैं। वैद्य चौमाल द्वारा डेंगू बुखार के दर्जनों रोगियों को जहाँ उपचार से स्वस्थ किया, वहीं इनके द्वारा नौवीं कक्षा के विद्यार्थी निशान्त इन्दोरिया के उपचार को तत्काल कर से कम नहीं माना जा रहा है। उक्त छात्र की प्लेट रेट अचानक



सादलपुर में वैद्य सुदर्शन चौमाल आयुर्वेदिक पद्धति से लोगों की गंभीर बीमारियों का इलाज कर रहे हैं।

इतनी कम हो जाती थी कि परिजनों को तत्काल भागना पड़ता था।

उक्त छात्र की बीमारी का अध्ययन कर लगातार मात्र आयुर्वेद उपचार किया जा रहा है एवं अब इसकी प्लेट रेट पौने दो लाख चल रही है। छात्र के पिता ललित कुमार एवं अन्य परिजन तो चौमाल को भगवान का प्रतिरूप मानते हैं। हरियाणा के फतेहाबाद के कालेज व्याख्याता रमेश कुमार वर्मा का मामला तो सबसे अलग है। उक्त रोगी के अंतों तथा पेट की ऐसी विमारी थी कि डॉक्टर भी अचिम्पत से हो गए। किसी से पता लगने पर उक्त प्रोफेसर राजगढ़ आए तथा वैद्य सुदर्शन चौमाल का उपचार शुरू किया। अब उन्होंने ना सिर्फ वापस करना पड़ता है।

द्वारा इस बारे में सोशल मिडिया एवं यू ट्यूब पर लगाई गई जानकारी के बाद हरियाणा के काफी रोगी यहाँ आकर उपचार ले रहे हैं। इसी प्रकार राजगढ़ के लीवर रोगी बुजुर्ग वरमालचन्द को नया जीवन ही मिल गया, जिसे चिकित्सकों ने ऑपरेशन के अलावा अन्य कोई उपाय से इन्कार कर दिया था।

वैद्य चौमाल का कहना है कि आयुर्वेद चिकित्सा से गंभीर रोगों का उपचार संभावित है, मगर लोगों में धैर्य तथा समय का अभाव नजर आता है। रोगी आजकल तुरन्त राहत चाहते हैं, मगर यह नहीं सोचते कि तत्काल रोग निदान से पड़ने दुष्प्रतिणामों का सामना करना पड़ता है।

रोजाना सौ रोगियों का करते हैं निःशुल्क उपचार

■ स्थानीय लोगों सहित हरियाणा के काफी रोगी ले रहे हैं उपचार
■ आयुर्वेद चिकित्सा से गंभीर रोगों का इलाज संभव : चौमाल

आयुर्वेद चिकित्सक एलौपैथी पद्धति का उपयोग करने लग गए हैं, यह भी आयुर्वेद पद्धति के लिए गंभीर स्थिति वाली बात है। चौमाल का कहना है कि आज युरोपियन देशों में भी भारतीय आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को अपनाया जा रहा है, जबकि हमारे देश में विपरित हो रही है। इनका मानना है कि एलौपैथी चिकित्सा के काफी दुष्प्रभावों को देखते हुए आवश्यकता है कि अपने देश की मूल प्राचीन आयुर्वेद चिकित्सा प्रणाली से योजनाबद्ध तरीके से प्रयास कर पुनः प्रतिष्ठित किया जाए। आने वाला समय निश्चित रूप से आयुर्वेद चिकित्सा का होगा तथा इसी से रोगियों को पर्याप्त लाभ मिल पाएगा।



राशिफल

रविवार 14 अक्टूबर, 2018

अश्विन मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठ तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2075, ज्येष्ठ नक्षत्र, सौभाग्य योग, कौलव करण, चन्द्रमा आज दिन 1:14 पर धनु राशि में संचार करेंगे।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रम-वृश्चिक, मंगल-मकर, बुध-तुला, गुरु-वृश्चिक, शुक-तुला, शनि-धनु, राहु-कर्क, केतु-मकर राशि में। आज ज्येष्ठ नक्षत्र दिन 1:14 तक, सौभाग्य योग प्राप्त: 7:00 तक है। इसके परचात मूल नक्षत्र, शोभन योग, तैलत करण आरम्भ होगा। आज छठ पूजन और मेला आरंभ जयपुर में है। आज सरस्वती आब्जन दिन 1:14 से आरम्भ होगा। गण्ड मूल आज संपूर्ण दिन-रात है।

शुभ चौपडिया: चर 7:55 से 9:21 तक, लाभ-अमृत 9:21 से 12:13 तक, शुभ 1:39 से 3:05 तक। राहकाल: 4:30 से 6:00 तक।

मेघ
अपनी योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। दिन के मध्याह्न परचात परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग से महत्वपूर्ण कार्यों में सार्थक सफलता मिल सकती है। दिन के मध्याह्न परचात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है। यात्रा टालना ठीक रहेगा। स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मिथुन
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादिता मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कर्क
परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सुख-सुविधाएँ बढ़ेंगी। दिन के मध्याह्न परचात विवादिता मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

सिंह
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। घर-गृहस्थी में परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है।

कन्या
परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। व्यक्तिगत प्रयासों से महत्वपूर्ण कार्यों में सार्थक सफलता मिल सकती है। नये-पुनरे मित्रों से मुलाकात हो सकती है। मध्याह्न परचात आपसी मतभेद बढ़ने का भय है।

तुला
आर्थिक कारणों से अटक कार्य बनेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा है। दिन के मध्याह्न परचात नये-पुनरे मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

वृश्चिक
व्यक्तिगत प्रतिष्ठा बढ़ेगी। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से संपर्क बनेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। मनोरंजन एवं सुख-सुविधाओं पर धन खर्च हो सकता है।

धनु
अनावश्यक धन खर्च होगा। भाग्य में भाग लेने का अवसर मिलेगा। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा। दिन के मध्याह्न परचात अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें।

मकर
वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा है। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। घर-परिवार में सुख-सुविधाएँ बढ़ेंगी। दिन के मध्याह्न परचात व्यक्तित्व कारणों से मन में असंतोष बढ़ सकता है।

कुंभ
अपने अति आवश्यक एवं महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है। आवश्यक कार्यों के लिए यात्रा संभव है।

मीन
पिछले कुछ समय से चल रहे परेशानियों दूर होने लगेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में सुसंदेश प्राप्त होंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा है। धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा।